International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 7, July- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नरेश मेहता के काव्य की रसानुभूति में बिम्ब योजना

डॉ॰ सुनीता
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय, रेवाडी,हरियाणा

रस काव्य का प्राण है। रस के अभाव में काव्य का काव्यत्व नष्ट हो जाता है। अतः काव्य की दृष्टि से रस प्रमुख है। रसस्यतोऽसौ इति रसः के अनुसार जिससे आस्वाद मिले वही रस है। तात्पर्य है जिससे आनन्द की प्राप्ति हो वही रस है। काव्य वही श्रेष्ठ है जिसको पढ़कर पाठक आनन्द विभोर हो जाए और अपने स्वरूप को भूल कर उसी में तन्मय हो जाये।

आचार्य भरत के अनुसार अर्थ रस पर आधारित है। इसलिए रस का अभाव होने पर अर्थ की भी स्थिति असम्भव है। इनके पश्चात् आचार्य भामह, दण्डी, उद्भट, रूद्रट, वामन और आनन्दवर्धन ने भी रस के महत्व को स्वीकार किया है। अग्नि पुराणकार का विचार है कि जैसे त्याग के बिना लक्ष्मी सुशोभित नहीं होती, वैसे ही वाणी भी रस के अभाव में शोभाहीन रहती है। उनका मत है कि वाग्वैदग्ध्य प्रमुख होने पर भी रस काव्य का जीवन है। अतः उनकी दृष्टि में रस की काव्य की आत्मा है–

''वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवाऽत्रा जीवितम्।''

आचार्य राजशेखर ने शब्दार्थ को काव्य का शरीर और रस को उसकी आत्मा माना है। ''शब्दार्थों ते शरीर रस आमा।'' आचार्य विश्वनाथ ने ''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।'' कहकर काव्य रस की महानता का समर्थन किया है।

विद्वानों ने काव्य में नौ रस माने हैं। श्रृंगार रस, हास्य रस, करूण रस, रौद्ररस, वीर रस, भयानक रस, वीभत्स रस, अद्भुत रस, शांत रस।

नरेश मेहता के काव्य में इन नौ रसों की अभिव्यक्ति में बिम्ब विधान का महत्वपूर्ण

योगदान रहा है। रसों की अभिव्यक्ति में बिम्बों का सौष्ठव प्रस्तुत है–

वास्तव में दाम्पत्य रति को ही ''श्रृंगार कहा जा सकता है। रति नामक स्थायी भाव, विभाग अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से पुष्ट होकर श्रृंगार रस कहलाता है। श्रृंगार रस के अन्तर्गत स्त्री और पुरूष के पारस्परिक प्रेम का वर्णन होता है। श्रृंगार रस के दो पक्ष होते हैं– संयोग और वियोग। संयोग पक्ष में नायक – नायिका मिलते हैं और वियोग पक्ष में वे एक दूसरे से अलग होते हैं। संयोग रस का उदाहरण प्रस्तुत है–

''मैं तो अनाम था प्रिया
तुमने ही मुझे
अपने नेत्रों के रूद्राक्ष की
यह माला पहना दी
और यह दीक्षा नाम दे दिया
वृक्ष था–
कदम्ब बना दिया।
तुम चाहोगी
तो धूप का पीताम्बर धारण कर
उत्सव – वृक्ष भी लगूँगा
ताकि रास सम्भव हो सक।''[1]

प्रस्तुत पद्यांश में रूद्राक्ष, कदम्ब, पीताम्बर आदि दृश्य और पौराणिक बिम्बों के माध्यम से कवि ने श्रृंगार के संयोग पक्ष की अभिव्यक्ति की है। इन पंछियों में प्रेमी, प्रेमिका से कहता है कि हे प्रिया मैं तो केवल बेनाम था परन्तु तुमने अपने इन नेत्रों से एक रूद्राक्ष की माला पहना दी है। मुझे एक दीक्षा नाम दे दिया है, जो एक वृक्ष था उसे कदम्ब बना दिया है। यदि तुम चाहती हो कि यह धूप का पीला वस्त्र मैं धारण कर दूँ तो फिर भी वृक्ष लगूंगा

[1] नरेश मेहता, समिध ;भाग–पद्ध, तुम मेरा मौन हो, पृ0 278

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 7, July- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ताकि तुम्हें प्रेम का यह रास सम्भव हो सके।

वियोग श्रृंगार में नायक–नायिका के विरह का वर्णन होता है– उदाहरण प्रस्तुत हैः–

‘मैं इसकी वेदना समझ सकता हूं कि
तुमसे पृथक होना क्या होता है।
अंगुलियों में लिपट
एक गुच्छ बनाकर फिंक जाने का
कितना भयावह अर्थ होता है, कि
हमेशा–हमेशा के लिए
एक सन्दर्भहीन अन्धकार में
बिना पंख के तैरना नहीं,
अंध्कार मात्रा का वरण कर लेना।''[2]

उपयुक्त पंक्तियों में ‘अंगुलियों में लिपट’ ;स्पर्श बिम्बद्ध ‘एक गुच्छ’ ;दृश्य बिम्बद्ध ‘बिना पंख’ ;दृश्य बिम्बद्ध के माध्यम से कवि ने प्रेमी को वियोग के आकांक्षा में दुखी चित्रित किया है। प्रेमी प्रेमिका से कहता है मैं तुम्हारी वेदना समझता हूं कि तुमसे अलग होना यह वेदना तो है। तुम्हारे ये बाल अंगुलियों में लिपट कर एक गुच्छे की तरह फेंक जाने के लिए अन्धकार में बिना पंख के तैरना होता, बल्कि अंधकार का वर्णन लेना ही तुम्हारी यह श्रृंगार रस में वियोग की स्थिति है। जिसमें प्रेमी को बहुत आहत चित्रित किया गया है।

हास्य रस

हास्य रस में विनोद का भाव होता है। किसी की उल्टी–सीधी वेश–भूषा, शब्दों वाक्यों का गलत उच्चारण, तरह–तरह की शारीरिक चेष्टाएं जिनको देखकर ह्रदय में हंसी के भाव पैदा होते हैं उन्हें हास्य रस कहा जाता है। उदाहरण प्रस्तुत है–

[2] नरेश मेहता, समिध ;भाग–पद्ध, तुम मेरा मौन हो, पृ0 239

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 7, July- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

''हाथी दांत के झुनझुनियों की कावड़ टांगें
सेठ सरीखा मोटा बादल
बैसाखी का लिए सहारा
थुल–थुल चला आ रहा
बचो, बचो,
यह संगमर–मर का पलंग आ रहा है,
पतले–पतले तबियाये बादल के जिसमें पंख लगे हैं
सूरज चांद जड़े दर्पण से
नील कुअर की मच्छरदानी
सिर पर लादे चली आ रही
वह पगली बदली बजारिन।''[3]

इन पंछियों में हाथी दांत ;दृश्य बिम्बद्ध कांवड़ ;दृश्य बिम्बद्ध बादल ;प्राकृतिक बिम्बद्ध संगमरमर का पलंग ;दृश्य बिम्बद्ध सूर्य चांद ;प्राकृतिक बिम्बद्ध मच्छरदानी ;दृश्य बिम्बद्ध बजारिन ;सामाजिक बिम्बद्ध को आधार बनाकर कवि ने हास्य रस की सृष्टि की है– आकाश में घने बादलों को हाथी दांत के समान प्रकट करके तथा झुण्डों की तरह कांवड़ टांगे व्यक्ति के समान बादलों की उपमा दी है। आकाश में यह सेठ सरीखा बादल बैसाखी का सहारा लेते हुए थुल–थुल करता चला आ रहा है। आगे कवि कहता है कि यह संगमरमर पत्थर का पलंग आ रहा है। पतले–पतले बादल जिसमें पंख लगे हैं। यह सूरज चांद के बीच दर्पण से लग रहे हैं और नीले आकाश में यह बादल मच्छरदानी–सी प्रतीत हो रही है। वह पागल बनजारन लग रही है। कवि नीलकुअर की मच्छरदानी, संगमरमर का पलग, बैसाखी का सहारा आदि भावों को अनेक प्राकृतिक और वस्तु बिम्बों के माध्यम से हास्य रस की अभिव्यक्ति करता है।

[3] नरेश मेहता, समिधा ;भाग–पद्ध, बोलने दो चीड़ को, पृ0 87–88

करूण रस

करूण रस में शोक का भाव होता है। प्रेमी, प्रेमिका में से किसी एक के देहावसान द्वारा प्रिया अपने किसी प्रिय के मृत्यु पर करूण रस की अभिव्यक्ति होती है।

''बिना बनवास की आज्ञा मिले
पिता की मृत्यु
विधवा जननियां
कौन है इनका निर्मित
पत्नी का हरण
पिता के मित्रा जटायु का मरण
मेरे लिए
उपेक्षित अंगद हुए
देह दाही हुए हनुमान
किसके लिए
उर्मिला–सी देवी
विरहनी किस प्रयोजन के लिए
व्यक्ति का बनवास
परिजन और पुरजन के लिए
अभिशाप क्यों बन जाए।''[4]

वन–वन भटके और क्या बिना बनवास की मुझे अनुमति मिल सकती है। एक तो पिता दशरथ की मृत्यु, विधवा माताएं, कौन है इनका निवारण करने वाला? पत्नी सीता का हरण और पिता के मित्रा जटायु का मरण तो मेर लिए दु:ख है। अतः राम ने मानवीय दृष्टिकोण से अपने आप को स्वयं दोषी माना है। राम पश्चाताप करते हैं कि उपेक्षित अंगद, जिसकी देह

[4] नरेश मेहता, समिध ;भाग–पद्ध, संशय की एक रात, पृ0 256–257

जल गयी हो वे हनुमान किसके लिए कितना पश्चाताप है। देवी के समान उर्मिला विरह में व्याकुल किस कारण व्यक्ति का बनवास परिजन और पुरजनों के लिए क्यों इतना अभिशाप बन गया है।

राम पौराणिक बिम्ब है वे भारतीय संस्कृति के मेरूदण्ड हैं। उनके हृदय में पिता और जटायु का मरण उर्मिला की विराहनीय स्थिति करूणा पैदा करती हैं। वह चिंतित है और पश्चाताप की अग्नि में जल रहे हैं। वह शोक ग्रस्त है और शोक करूण रस का स्थायी भाव है।

रौद्र रस

रौद्र रस में मोध की परिपक्व परिस्थिति होती है और अपने से प्रतिकुल विषय में तीक्षणता का भाव मोध को उत्पन्न करता है। मोध का आलम्बन अनिष्ट करने वाला, अनुचित बात करने वाला कोई न कोई पुरूष होता हैं–

''आत्म हनन से कहीं अच्छा है
ज्वारों को भेदते हुए
खड्ग से पाताल चीर दें
यदि एकान्त सत्य को समर्पित कर सकना
सम्भव नहीं तो
मेरे विवेक
अच्छा है
दिशाघाती प्रलाप वन
दिशाओं के अंधेरों में
इतना बजते चले जाएँ
चलते चले जाएँ
जिसे सुन भूकम्प भी बहरे हो जाए

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 7, July- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

लेकिन मुझसे प्रश्न मत करो।''[5]

उपर्यक्त पंछियों में 'ज्वारों' ;प्राकृतिक बिम्बद्ध खड़ग् ;दृश्य बिम्बद्ध पाताल ;दार्शनिक बिम्बद्ध भूकम्प ;प्राकृतिक बिम्बद्ध आदि को आधार मानकर राम को रौद्र रस के अन्तर्गत मोध का आलम्बन बनाया गया है। उग्रता, आवेग आदि रौद्र के संचारी भाव हैं। 'संशय की एक रात' में रामयुद्ध वेश में गवाक्ष की चौखट पर कुहनी टिकाए चिंतित हैं और युद्ध में जाने के लिए मोध की स्थिति में लीन हैं।

वीररस

वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है जब व्यक्ति के ह्रदय में शत्रु को मिटाने के लिए उत्साह जागृत होता है। वहां वीर रस की सृष्टि होती है।

''खड्ग और बाणों के द्वारा
जिसे होना है
विचारों में जो हो चुका
उसे अब भुजाओं से होना है
ओ मेरे विवेक
अब यह प्रश्न ही नहीं रहा कि
युद्व के बाद होगी शान्ति
जबकि सम्भव है
युद्व ही युद्व का उदार हो
या यह भी सम्भव है कि शान्ति
युद्व के सत्य की एक चेष्टा हो
ओ मेरे विवेक
मुझसे मत प्रश्न करो

[5] नरेश मेहता, समिधा ;भाग–पद्ध, संशय की एक रात, पृ0 256–257

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 7, July- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संशय की बेला अब नहीं रही
अन्तरीय जल में
सूर्योदय साक्षी है
संशय की बेला अब नहीं रही।''[6]

वीर रस की अभिव्यक्ति हुई है। वीर रस के अन्तर्गत केवल युद्व ही नहीं बल्कि दान देना आदि कृत्य भी आते हैं।

भयानक रस

अनिष्ट की संभावना देखने से उसकी चिंता में जो विकलता उत्पन्न होती है वहीं भयानक रस की सृष्टि होती है। प्रलय, रोमांच, कम्प आदि भयानक के अनुभाव हैं और जुगुप्सा, मोह, त्रास, ग्लानि, दीनता आदि इसके संचारी भाव हैं–

''दावानल में
जलते जंगल में पेड़ों का वह कराहना
मध्यरात्रि के सांटे में ऐसा लगता
जैसे युद्व क्षेत्रा में दुर्योधन अब भी कराहता
पत्थर के प्रयात–सा
टूट–टूट कर गिरना
वह कच्ची कगार का
जैसे युद्व क्षेत्रा में तेज हवाएं
नर मुण्डों को टकरा–टकरा बजा रही हो।''[7]

उपर्युक्त पंक्तियों में जलते जंगल ;प्राकृतिक बिम्बद्ध मध्यरात्रि ;प्राकृतिक बिम्बद्ध कराहता दुर्योध्न ;पौराणिक बिम्बद्ध नर मुण्डों का टकरा–टकरा कर बजना ;दृश्य एवं ध्वनि

[6] नरेश मेहता, समिधा ;भाग–पद्ध, संशय की एक रात, पृ0 258
[7] नरेश मेहता, समिधा ;भाग–पद्ध, महाप्रस्थान, पृ0 268

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 7, July- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बिम्बद्ध के माध्यम से युद्व की भयानकता का चित्राण है।

प्रस्तुत प्रसंग में दुर्योधन आलम्बन है। युद्व की भयंकर चेष्टाएं उद्दीपन है। युद्व में प्रलय आदि अनुभव है आवेग संचारी भाव है। अतः यहां भयानक रस की सृष्टि हुई है।

वीभत्स रस

वीभत्स रस में स्थायी भाव घृणा अथवा जुगुप्सा का होता है। घृणित वस्तुओं के पढ़ने, सुनने या देखने से जो ग्लानि जागृत होती है वहीं वीभत्स रस की सृष्टि होती है।

''घर क्या था बूचड़खाना था
मांस महकता रहता
कहीं, किसी की खाल खिंच
रही, कोई छूरी से कटता
कांटे हड्डी फैले रहते
रस लकीरें भू पर
जीवित नरक सरीखी घर में
उनका जीवन दूभर
था सब कुछ बीभत्स वहां
परिवार लोग भी सारे
काले तन पर कसे लंगोटी
लगते क्यों हत्यारे।''[8]

उपर्युक्त पंक्तियों में बूचड़खाना, महकता मांस खाल खींचना, छूरी से काटना, हड्डी फैलना, रक्त लकीरें धरती पर आदि दृश्य बिम्बों के माध्यम से वीभत्स रस की अभिव्यक्ति होती है। बूचड़खाने में मांस की दुर्गन्ध उद्दीपन है नाक सिकुड़ना अनुभाव है। शबरी के घर के घिनौने दृश्य आलम्बन है। इस प्रसंग में परिवार के लोगों के काले शरीर पर लंगोटी होना

[8] नरेश मेहता, समिधा ;भाग–पद्व, शबरी, पृ0 480

ऐसे लगता है जैसे कोई हत्यारा हो इन प्रसंगों में वीभत्स रस की सृष्टि हुई है।

अद्भुत रस

विस्मय अद्भुत रस का आधार है। जब आलम्बन में कोई अद्भुत बात हो या द्रष्टा, श्रोता या सामाजिक के मन में कोई हैरानी पैदा हो वहां अद्भुत रस होता है।

''शान्ति–पाठ हो चुका, मतंग
तब मण्डप से उठ आये,
देखा फाटक पर स्त्राी को
तो थोड़ा सकुचाये।''[9]

पम्पासुर में जब मतंग)षि पाठ–पूजा समाप्त करके मण्डप से उठ आये तो उन्होंने दरवाजे पर शबरी नाम की स्त्राी को देखा, तो उनका मन आश्चर्य में पड़ गया कि मेरे दरवाजे पर ये स्त्राी कौन है? अतः प्रस्तुत प्रसंग में मतंग)षि विस्मय में पड़ जाते हैं। यहां पर आलम्बन मतंग)षि है। शबरी जाति की स्त्राी आश्रय है विस्मय हर्षात्मक भाव है। मतंग)षि के पौराणिक बिम्ब द्वारा विस्मय की सृष्टि की गई।

शांत रस

भक्ति रस का स्थायी भाव निर्वेद है। निर्वेद उस वैराग्य अथवा तत्वज्ञान को कहते हैं जो दरिद्रता, व्याध्,ि अपमान, ईर्ष्या, भ्रम, आक्रोश, ताड़न, इष्टवियोग, परिविभूति दर्शन आदि क्लेशों के कारण उत्पन होता है। उदाहरण

''प्रभु के नील नेत्रों जैसा
यह सारंग आकाश
और योगियों के असंग मन जैसा निर्वेद
प्रशान्त यह हिमालय
ये तुम्हें कोई आमन्त्रण नहीं देते कृष्णा

[9] नरेश मेहता, समिधा ;भाग–पद्ध, शबरी, पृ0 486

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 7, July- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

क्या आगत की
इस देवताओं वाली आश्वस्ति से
अध्कि माहक हैं
विगत की वह मानवी–पुकार।''[10]

प्रस्तुत पंक्तियों में प्रभु के नील नेत्राों, योगियों के असंग मन ;दार्शनिक बिम्बद्ध हिमालय ;प्राकृतिक बिम्बद्ध कृष्णा ;पौराणिक बिम्बद्ध के माध्यम से युधिष्ठिर के माध्यम से शांत भाव की अभिव्यक्ति हुई है। युद्व के बाद का शांत वातावरण है। जो अनेक बिम्बों के माध्यम से उभारा गया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नरेश मेहता ने अपने काव्य में विभिन्न रसों की अभिव्यक्ति के लिए तरह–तरह बिम्बों का प्रयोग किया है। बिम्बों ने उनकी कविता को सौन्दर्य प्रदान किया है। दार्शनिक कथ्य को अभिव्यक्त करने के लिए नरेश मेहता ने सार्थक और प्रभावशाली बिम्बों का प्रयोग किया है।

[10] नरेश मेहता, समिधा ;भाग–पद्ध, महाप्रस्थान, पृ0 299

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 7, July- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परिशिष्ट

उपजीव्य ग्रन्थ

1. नरेश मेहता, समिधा ;भाग–पद्ध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वि.सं. 2005।
2. नरेश मेहता, समिधा ;भाग–पद्ध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वि.सं. 2005।

आधर ग्रन्थ

मुक्तक काव्य

3. नरेश मेहता, दूसरा सप्तक ;सम्पादक अज्ञेयद्ध, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1981।
4. नरेश मेहता, अरण्या, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1985।
5. नरेश मेहता, बनपाखी सुनो, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1997।
6. नरेश मेहता, बोलने दो चीड़ को, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकार प्राईवेट लिमिटेड, बम्बई, 1961।
7. नरेश मेहता, मेरा समर्पित एकांत, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1962।
8. नरेश मेहता, उत्सवा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1979।
9. नरेश मेहता, तुम मेरा मौन हो, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993।
10. नरेश मेहता, आखिर समुद्र से तात्पर्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1988।
11. नरेश मेहता, पिछले दिनों नंगे पैरों, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1989।

प्रबन्ध काव्य

12. नरेश मेहता, संशय की एक रात, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्रा.लिमि., बम्बई, 1962।
13. नरेश मेहता, महाप्रस्थान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975।
14. नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1995।
15. नरेश मेहता, शबरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997।
16. नरेश मेहता, प्रार्थना पुरूष, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

सहायक ग्रन्थ

17. डॉ0 केदारनाथ सिंह, महादेवी वर्मा के काव्य में बिम्ब विधान, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, प्र.सं. 1971।
18. डॉ0 कल्याण वैष्णव, नरेश मेहता के काव्य का अनुशीलन, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2010।
19. डॉ0 केदारनाथ सिंह, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब–विधान का विकास, भारतीय ज्ञान पीठ, नई दिल्ली, प्रं.सं. 1971।
20. डॉ0 केदारनाथ सिंह, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान (शोध प्रबंध) राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2011।
21. डॉ0 नगेन्द्र, डॉ0 नगेन्द्र ग्रन्थावली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रं.सं. 1998